DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)

PAPER-3 ,UNIT-2,DYNAMIC ASPECT OF MIND

LECTURE-13

DYNAMIC ASPECT OF MIND

मन का गत्यात्मक या संरचनात्मक पहलु

फ्रायड के अनुसार ,मन के गत्यात्मक पहलु से तात्पर्य उन प्रतिनिधियों या साधनों से होता है जिसके द्वारा मूल प्रवृतियों से उत्पन्न मानसिक संघर्षो का समाधान होता है |

ब्राउन के अनुसार "व्यक्तित्व के गत्यात्मक पहलु से तात्पर्य उन प्रतिनिधियों से होता है जिनके मूल – प्रवृतियों से उत्पन्न रहने वाले संघर्षो का समाधान किया जाता |

मूल प्रवृतियों से तात्पर्य वैसे जन्मजात शारीरिक उत्तेजन से होता है जिसके द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के व्यवहार निर्धारित किये जाते है |

फ्रायड ने मूल प्रवृतियों को मूलतः दो भागों में बांटा है – जीवन मूल प्रवृति तथा मृत्यु मूल प्रवृति|जीवन मूल प्रवृतियों द्वारा व्यक्ति के सभी तरह के रचनात्मक कार्यो का तथा मृत्यु मूल प्रवृतियों द्वारा व्यक्ति के सभी तरह ध्वंसात्मक कार्यो तथा आक्रमकारी व्यवहारों का निर्धारण होता है |सामान्य व्यक्तित्व में इन दोनों तरह के प्रवृतियों में एक संतुलन बना होता है |जब इन परस्पर विरोधी मूल प्रवृतियों संघर्ष होता है तो व्यक्ति उनका समाधान करने की कोशिश करता है |
इस तरह के समाधान के लिए फ्रायड ने मूलतः तीन प्रतिनिधियों का वर्णन किया है – **उपाहं (id),अहं(ego) तथा पराहं(super ego)**
इन तीनों का वर्णन निम्नांकित है –

1. उपाहं (id) –id व्यक्तित्व का जैविक तत्व है जिनमें उन प्रवृतियों का भरमार होता है जो जन्मजात होती है तथा जो असंगठित ,कामुक,आक्रामकतापूर्ण तथा किसी नियम आदि को मानने वाली नहीं होती है |एक नवजात शिशु में मूलतः id की प्रवृतियों का ही भरमार होता है |id की प्रवृतियाँ “आनंद सिद्धांत” द्वारा निर्धारित होती है क्योंकि ऐसी प्रवृतियों का मुख्य उद्देश्य आनंद देने वाले प्रेरणाओं की संतुष्टि करना होता है |इसे उचित –अनुचित ,विवेक-अविवेक ,समय ,स्थान आदि से कोई मतलब नहीं होता है क्योंकि वह अचेतन में होता है |व्यक्तित्व में उत्पन्न तनावों एवं संघर्षो को दूर के लिए id मूलतः दो तरह के प्रक्रम अपनाता है –सहज प्रक्रिया तथा प्राथमिक प्रक्रिया |

id की कुछ ख़ास –खास विशेषताएं होती है |

(i)id में जीवन मूलप्रवृतियों तथा मृत्यु मूलप्रवृतियों दोनों का समावेश होता है |

(ii)id का संबंध जीवन की वास्तविकताओं से नहीं होता है |

(iii)id आनंद सिद्धांत द्वारा निर्देशित होता है |

(iv)id अतार्किक होता है |

(v)id नैतिकता से परे एवं असंगठित होता है |

(vi)id पुर्णतः अचेतन होता है |

2. **अहं (ego)-** ego मन के गत्यात्मक पहलु का दूसरा प्रमुख भाग है |जन्म के कुछ दिन बाद तक बच्चा पुर्णतः id की प्रवृतियों द्वारा नियंत्रित होता है |परन्तु सामाजिक नियमों एवं नैतिक मूल्यों के कारण उनकी ऐसी प्रवृतियों या इच्छाओं की पूर्ति नहीं होती है जिसके फलस्वरूप उसमे निराशा का अनुभव होता है और उसका सम्बन्ध वास्तविकता से स्थापित होता है |इस प्रक्रिया में उसमे ego का विकास होता है |अतः ego मन का वह हिस्सा है जिसका संबंध वास्तविकता से होता है तथा जो बचपन में id की प्रवृतियों से ही जन्म लेता है |ego वास्तविकता सिद्धांत द्वारा नियंत्रित होता है तथा वातावरण की वास्तविकता के साथ इसका सीधा सम्बन्ध होता है |ego को व्यक्तित्व का निर्णय लेने वाला या कार्यकारणी शाखा माना गया है |चूँकि ego अंशतः चेतन ,अंशतः अर्द्धचेतन तथा अंशतः अचेतन होता है इसलिए ego द्वारा इन तीनो स्तर पर ही निर्णय लिया जाता है |

फ्रायड के अनुसार ego की प्रमुख विशेषताएँ निम्नांकित है

(i) ego व्यक्तित्व की कार्यकारणी शाखा के रूप में कार्य करता है |अतः इसके द्वारा सभी महत्वपूर्ण निर्णय लिए जाते है |

(ii) ego अंशतः चेतन ,अशतः अर्द्धचेतन तथा अशतः अचेतन होता है |

(iii) ego 'वास्तविकता सिद्धांत' द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित होता है |

(iv) ego का सम्बन्ध नैतिकता से नहीं होता है |

(v) ego एक अभियोजक के रूप कार्य करता है |

3.**पराहं (super ego)-**super ego को 'अहं से ऊँचा भी कहा गया है | जैसे जैसे बच्चा बड़ा होते जाता है ,वह अपना तादात्म्य माता –पिता के साथ स्थापित करते जाता है जिसके परिणामस्वरूप वह यह सिख लेता है की क्या उचित तथा क्या अनुचित है |इसी तरह के सीखना से पराहं (super ego)के विकास की शुरुआत होती है |super ego को व्यक्तित्व का नैतिक शाखा माना गया है जो व्यक्ति को यह बतलाता है की कौन कार्य नैतिक है तथा कौन कार्य अनैतिक है |यह आदर्शवादी सिद्धांत द्वारा निर्देशित एवं नियंत्रित होता है |इस तरह से बचपन में समाजीकरण के दौरान बच्चा माता पिता द्वारा दिए गये उपदेशो को अपने ego में आत्मशात कर लेता है और यही बाद में super ego का रूप ले लेता है| super ego विकसित होकर एक तरफ id की कामुक ,आक्रामक एवं अनैतिक प्रवृतियों पर रोक लगता है तो दूसरी और ego को वास्तविक एवं यथार्थ लक्ष्यों से हटा कर नैतिक लक्ष्यों की ओर ले जाता है |एक पुर्णतः विकसित super ego व्यक्ति के कामुक एवं आक्रामक प्रवृतियों पर नियंत्रण दमन के माध्यम ,से करता है हालांकि वह दमन का प्रयोग

स्वयं नहीं करता है |फिर भी वह अहं को दमन के प्रयोग का आदेश देकर ऐसी इच्छाओं पर नियंत्रण करता है |

ego के समान ही super ego चेतन ,अर्द्धचेतन एवं अचेतन तीनो ही होता है |super ego के वास्तविक स्वरूप को ठीक ढंग से समझने के लिए इसके निम्नांकित विशेषताओं का वर्णन करना आवश्यक है |

(i)super ego व्यक्तित्व का नैतिक कमांडर होता है |

(ii)id के समान ही super ego वास्तविकता से परे यानी अवास्तविक होता है |

(iii)super ego के दो उपतंत्र होते है –अन्तःकरण या विवेक तथा अहं –आदर्श |

(iv)super ego चेतन ,अर्द्धचेतन एवं अचेतन तीनो स्तर पर कार्य करता है |

(v)super ego व्यक्तित्व को अनैतिक एवं कामुक प्रवृतियों पर रोक दमन द्वारा लगवाता है |